SJIF Impact Factor - 5.54

E- ISSN 2582-5429

# AKSHARA

Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

February 2022 Special Issue 04, Vol. VI (C)

# CONTEMPORARY TRENDS IN HUMANITIES, COMMERCE AND LIBRARY SCIENCE (CTHCLS 2022)

Guest Editor

**Dr. Ganesh Anant Thakur**

Principal

Mahatma Phule Arts, Science and Commerce College, Panvel.

District. Raigad. Maharashtra. 410206

Executive Editor

**Mr. Sopan L. Gove**

IQAC Co-ordinator

M.P.A.S.C. College, Panvel

Associate Editor

**Mr. Sunil S. Avachite**

Librarian

M.P.A.S.C. College, Panvel

Chief Editor : Dr. Girish S. Koli, AMRJ

For Details Visit To - www.aimrj.com

Akshara Publication

*Akshara Multidisciplinary Research Journal*
**Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal**

**February 2022**
**Special Issue 04 Volume VI (C)**

# CONTEMPORARY TRENDS IN HUMANITIES, COMMERCE AND LIBRARY SCIENCE (CTHCLS 2022)

**Guest Editor**
**Dr. Ganesh Anant Thakur**
Principal
Mahatma Phule Arts, Science and Commerce College, Panvel.
District. Raigad. Maharashtra. 410206

**Executive Editor**
**Mr. Sopan L. Gove**
IQAC Co-ordinator
M.P.A.S.C. College, Panvel

**Associate Editor**
**Mr. Sunil S. Avachite**
Librarian
M.P.A.S.C. College, Panvel

*Akshara Publication*
Plot No 143 Professors colony,
Near Biyani School, Jamner Road, Bhusawal Dist Jalgaon Maharashtra 425201

E- ISSN 2582-5429

**Akshara Multidisciplinary Research Journal**

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

February 2022 Special Issue 04 Volume VI (C)

SJIF Impact- 5.54

## Editorial Board

### -: Chief & Executive Editor:-

**Dr. Girish Shalik Koli**
Dongar Kathora
Tal.Yawal, Dist. Jalgaon [M. S.] India Pin Code: 425301
Mobile No: 09421682612
Website:www.aimrj.com Email:aimrj18@gmail.com

### -:Co-Editors :-

- **Dr. Sirojiddin Nurmatov,** Associate Professor, Tashkent Institute Of Oriental Studies, Tashkent City, Republic Of Uzbekistan
- **Dr.Vivek Mani Tripathi**, *Assistant Professor*, Faculty of Afro – Asian Languages and Cultures, Guangdong University of Foreign Studies, Guangzhou, Guangdong, China
- **Dr.Maxim Demchenko** Associate Professor Moscow State Linguistic University, Institute Of International Relationships, Moscow,Russia
- **Dr.Chantharangsri Phrakhrusangkharak Yanakorn,** Assistance Professor Songkhla,Thailand
- **Dr.Mohammed Abdraboo Ahmed Hasan,** Assistance Professor (English) The Republic of Yemen University of Abyan General manager of Educational affairs in University of Abyan ,Yemen.
- **Dr. Vijay Eknath Sonje,** *Assistant Professor* (Hindi) D. N. College, Faizpur [M. S.]
- **Mr. Nilesh SamadhanGuruchal,** *Assistant Professor* (English)Smt. P. K. Kotecha Mahila Mahavidyalaya, Bhusawal, Dist. Jalgaon [M. S.] India.
- **Dr. Shaikh Aafaq Anjum,** *Assistant Professor* (Urdu) Nutan Maratha College, Jalgaon. [M. S.] India.
- **Mr. Dipak Santosh Pawar,** *Assistant Professor* (Marathi)Dr. A.G.D. Bendale Mahila Mahavidyalya, Jalgaon [M. S.] India.

**AMRJ Disclaimer:**

*For the purity and authenticity of any statement or view expressed in any article. The concerned writers (of that article) will be held responsible. At any cost member of Akshara's editorial Board will not be responsible for anyconsequences arising from the exercise of Information contained in it.*

E- ISSN 2582-5429

AMRJ

Akshara Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

February 2022 Special Issue 04 Volume VI (C) SJIF Impact- 5.54

# Index



| Sr.No. | Title of the paper | Author's Name | Pg.No |
|---|---|---|---|
| 1 | जागतिकीकरण आणि नवसंवेदन | डॉ. विद्या नावडकर | 05 |
| 2 | उत्तर आधुनिकतावादाच्या अनुषंगाने नव्वदोत्तर मराठी अनियतकालिकांमधील कविता या साहित्यप्रकाराची चिकित्सा | प्रा. प्रवीण गायकर | 09 |
| 3 | 'ओरबिन'- औद्योगिकीकरणाचे भीषण वास्तव (गजानन देसाई) | डॉ. वर्षा फाटक | 13 |
| 4 | आधुनिक मराठी ग्रामीण कविता | डॉ. अतुल चौरे | 16 |
| 5 | उत्तर आधुनिकता आणि आदिवासी साहित्य | प्रा. अनिल वळवी | 20 |
| 6 | आधुनिक मराठी साहित्य-नाटक साहित्यप्रकार | प्रा, दीपक गडकर | 24 |
| 7 | आदिवासी कवितेची वाटचाल | डॉ. सोनू लांडे | 28 |
| 8 | कोरोना महामारीचा नाशिक जिल्ह्यातील कृषी पर्यटनावर झालेला परिणाम | वाघ जीवनकुमार शामराव | 31 |
| 9 | कोविड काळात भारतातील स्थूल देशांतर्गत उत्पादनाचे विश्लेषण | प्रा. संतोष गोरवे | 35 |
| 10 | कृषी संशोधनाची कृषी विकासातील भूमिका संदर्भ: प्रादेशिक संशोधन केंद्र कर्जत, जिल्हा. रायगड, महाराष्ट्र | डॉ. रमेश पदु म्हात्रे | 39 |
| 11 | भारतातील कृषी संशोधनाची कृषी विकासातील भूमिका | श्री कांतीलाल शंकर पाटील<br>डॉ. अनिल नारायण पाटील | 44 |
| 12 | आदिवासी महिलांच्या शाश्वत विकासासाठी शासनाच्या शैक्षणिक योजना: संदर्भ पनवेल तालुका | सौ. सुचिता रमेश म्हात्रे<br>डॉ. डी. व्ही. पवार | 48 |
| 13 | भारताच्या आर्थिक विकासात सागरी मत्स्य व्यवसायाची भूमिका | सिताफुले एल .एस . | 53 |
| 14 | कृषी संशोधनाची कृषी विकासातील भूमिका संदर्भ : कृषी संशोधन केंद्र पालघर | डॉ. जयवंत काशिनाथ पाटील | 58 |
| 15 | महाराष्ट्रातील शैक्षणिक सुधारणा चळवळीचा इतिहास | डॉ. शिंदे भानुदास धोंडीबा | 61 |
| 16 | भारतीय लोकशाही समोरील आव्हाने | डॉ. सुनिल लक्ष्मण परदेशी | 64 |
| 17 | महात्मा गांधीजींच्या अहिंसेची वर्तमानकाळाच्या संदर्भात विज्ञाननिष्ठ प्रासंगिकता | डॉ. गणेश शंकर विघाटे | 66 |
| 18 | १९६२ चे चीनचे आक्रमण व यशवंतराव चव्हाणांची भूमिका | डॉ. राजश्री निकम | 69 |
| 19 | रायगड जिल्ह्यातील आदिवासी समाजाच्या आर्थिक समस्या | डॉ. पाथरकर एस. व्ही. | 73 |
| 20 | भारतीय स्वातंत्र्य चळवळीतील विद्यार्थ्यांचे योगदान | प्रा. शिंदे नरायण अंबू | 76 |
| 21 | इंदिरा गांधी यांचे जीवन व कार्य एक चिकित्सक अभ्यास | डॉ. रविंद्र बाबुराव जाधव | 78 |
| 22 | जागतिक राजकारणातील समकालीन समस्या | प्रा. डॉ. पराग गोविंद पाटील | 81 |

AMRJ

E- ISSN 2582-5429

Akshara Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

February 2022 Special Issue 04 Volume VI (C) SJIF Impact- 5.54


| Sr.No. | Title of the paper | Author's Name | Pg.No |
|---|---|---|---|
| 23 | COVID-19 आणि आशा भविष्यातील विषाणूंच्या धोक्यांसाठी मानसिक रणनीती | डॉ. पुरुषोत्तम परीट | 85 |
| 24 | भारत-चीन संबंध : दशा आणि दिशा | डॉ .आय . पी .कोकणे | 88 |
| 25 | महाराष्ट्रातील सामाजिक व राजकीय चळवळी आणि विचारधारा | प्रा. महेश बिन्हाडे | 92 |
| 26 | स्त्रीवादाचे समकालीन प्रवाह | डॉ. सौ. हेमलता आनंद सावंत | 95 |
| 27 | घायपात वनस्पतीचे जलसंधारण, मृदासंधारण व जैवविविधता संवर्धनातील महत्व | डॉ. राजाराम आप्पाजी पाटील | 97 |
| 28 | शाश्वत शेतीची सद्यस्थिती | डॉ. मुरलीधर पंडित गायकवाड | 100 |
| 29 | हरितग्रंथालये: काळाचीगरज | प्रा. वाय.बी. लबडे | 104 |
| 30 | महाविद्यालय ग्रंथालयमध्ये ई-संसाधने आणि माहिती सेवा उपयुक्त | श्री लिनताज भास्कर ऊके | 109 |
| 31 | ग्रंथ संरक्षण : काल, आज आणि उद्या | डॉ. शीला गोडबोले | 114 |
| 32 | समकालीन भारतीय इतिहास 1947 ते 2000 | प्रा. डॉ. प्रज्ञा कामडी | 117 |
| 33 | हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श | प्रा. पटेकर व्ही.सी. | 123 |
| 34 | मंजुल भगत के 'दूत' कहानी संग्रह में स्त्री विमर्श | प्रा. बगनर डी.के. | 126 |
| 35 | आदिवासी महिलाओं से शोधरूपी विशिष्ट समालाप | डॉ.संध्या जैन | 128 |
| 36 | समकालीन महिला साहित्यकारों के साहित्य में नारी-विमर्श | डॉ. सतीश शिंदे | 131 |
| 37 | साहित्य और सिनेमा का अंतसंबंध: | प्रा. स्वाती चव्हाण | 135 |
| 38 | हिंदी साहित्य में दलित विमर्श | प्रा. नारायण बागुल | 137 |
| 39 | `एकलव्य से संवाद` कविता में आदिवासी संवेदनाए | प्रा. मनोहर लोटे | 139 |
| 40 | साहित्य और सिनेमा | डॉ. पी.आर. नलावडे | 142 |
| 41 | किन्नर उदारीकरण: उद्यतन भारतीय समाज | डॉ. किरण खन्ना | 145 |
| 42 | `सीता मौसी` उपन्यास में स्त्री-संघर्ष | राठौड़ ज्योति चंद्रकांत | 148 |
| 43 | डॉ. विवेकी राय के समकालीन कहानियों में दलित विमर्श | डॉ. बामणे डी. के. | 153 |
| 44 | किन्नर विमर्श: थर्ड जेंडर के अधिकारों की और बढ़ते कदम | जयवीर सिंह | 159 |
| 45 | मीराबाई के काव्य में 'ऋतुवर्णन' | डॉ. संगीता माळी | 163 |
| 46 | हिंदी साहित्य में अभिव्यक्त वृद्ध विमर्श | प्रा. अविनाश कोल्हे | 168 |
| 47 | समाज और साहित्य का सिनेमापर प्रभाव | प्रा. राजेन्द्र देवाळकर | 171 |
| 48 | हिंदी साहित्य और वृतचित्र | प्रा. संदीप काळे | 174 |
| 49 | राजनीति विज्ञान और संशोधन एवं संकल्पना | प्रा. सुधाकर कांबळे | 176 |

E- ISSN 2582-5429

AMRJ

Akshara Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

February 2022 Special Issue 04 Volume VI (C) SJIF Impact- 5.54

25

# महाराष्ट्रातील सामाजिक व राजकीय चळवळी आणि विचारधारा

**प्रा. महेश बिऱ्हाडे**

को.ए.सो.लक्ष्मी शालिनी महिला महाविद्यालय, पेझारी ता.अलिबाग जिल्हा-रायगड

प्रस्तावना :

समाजही व्यक्ती संबंधांची साखळी समजली जाते.विविधांगी व्यक्तिमत्त्वाच्या सर्व घटकांना एकत्रित बांधण्याचे कार्य समाज करत असतो .त्यामुळे त्यामुळे व्यक्तीचे व्यक्तिगत व सामाजिक जीवन नियंत्रित होते. जेव्हा समाजातील विविध घटक रचनात्मक आणि विकासात्मक कार्य करत असतात तेव्हा समाज घटकांमध्ये राजकीय जाणिवा निर्माण होऊन , त्यांचे राजकीय वर्तन घडत असते. परंतु या प्रक्रियेमध्ये काही वेळेस राजकीय व्यवस्थेकडून नियंत्रण करताना आणि प्रत्येकाला आवश्यक आणि न्याय्य घटक दिले जातात.परंतु काही वेळेस दुर्लक्षित झालेल्या घटकांना जेव्हा स्वतःच्या उणेपणाची जाणीव होती तेव्हा स्वतःला आवश्यक व न्याय्य वितरण घटकांची मागणी असे उपेक्षित व दुर्लक्षित घटक करू लागतात. त्यासाठी विशिष्ट विचारांची किंवा सिद्धांताचा आधार घेतला जातो. प्रसंगी त्यांना सामाजिक प्रयत्नांची जोड मिळते तेव्हा राजकीय किंवा सामाजिक चळवळ किंवा आंदोलन यांचा उदय होतो. त्यावेळी प्रत्यक्ष प्रसिद्ध सामाजिक व राजकीय व्यवस्था निर्माण झालेले दोष दूर करण्यासाठी अनेक कालबाह्य सामाजिक राजकीय प्रथा बदलण्यासाठी, स्वतःवरील अन्यायाचे परिमार्जन करण्यासाठी ,नवीं स्थित्यंतरे घडवण्यासाठी ,अन्यायकारक कायदे व अन्यायकारक अंमलबजावणी यंत्रणा बदलण्यासाठी आणि एखादी नवी व्यवस्था स्वीकारली जावी या मागणीसाठी.ही सर्व आंदोलने किंवा चळवळी केल्या जातात. थोडक्यात कोणतीही चळवळ म्हणजे विशिष्ट विचार किंवा सिद्धान्ताआधारे सामूहिक प्रयत्नद्वारे समाजातील राजकीय किंवा सामाजिक प्रश्नावर उत्तर शोधून समाजाला उर्जितावस्थाकडे नेण्याचा मार्ग होय.

**महाराष्ट्रातील सामाजिक आणि राजकीय चळवळी**

सामाजिक आणि राजकीय चळवळी नेमक्या कोणत्या कारणास्तव हाती घ्यावे लागतात?हा मोठा प्रश्न आहे.सर्वसाधारणपणे समाजात जुनाट कालबाह्य परंपरा, सामाजिक भेदभाव, विशिष्ट गटांची किंवा प्रस्थापितांची मनमानी थांबवणे , नवीन विचार किंवा कार्यक्रम राबवणे.उपेक्षित गटांच्या समस्येकडे लक्ष वेधणे. इत्यादींसाठी सामाजिक चळवळी सुरु होतात. आणि राजकीय अधिकारांची प्राप्ती ,राजकीय जाणीवजागृती, लोक अधिकारांची मागणी.अन्यायकारक कायद्याला विरोध,हक्कांचे संरक्षण, उपेक्षितांना न्याय मिळवून देणे, नव्या कायदेशीर उपाययोजना इत्यादींची मागणी.या मागण्यांमुळे राजकीय चळवळींचा उदय होतां.

महाराष्ट्रात सामाजिक व राजकीय अशा दोन्ही प्रकार चळवळी किंवा आंदोलन झाले आहेत.यासर्वचळवळ आढावा घेणे शक्य नाही.परंतु ज्या सामाजिक चळवळी झाल्या.त्यांनी महाराष्ट्राचे अंतर्बाह्य परिवर्तन घडवून आणले आहे. भारतामध्ये महाराष्ट्र हे पुरोगामी राज्य आहे. त्याचे सर्व श्रेय या सर्व सामाजिक चळवळीना आहे, म्हणून महाराष्ट्राचे.सामाजिक स्थान भारतात अनन्यसाधारण आहे. महाराष्ट्रामध्ये आतापर्यंत ज्या काही सामाजिक राजकीय चळवळी झाल्या.च्या अनेक आहे. त्यांचा सर्वच बाबतीत आढावा घेणे येथे शक्य नाही. परंतु महत्त्वपूर्ण चळवळीना जे वैचारिक अधिष्ठान प्राप्त झाले त्या संदर्भात विश्लेषण करणे अधिक संयुक्तिक ठरेल.सामाजिक चळवळीचा मुख्य हेतू सामाजिक स्थित्यंतरे घडवणे हाच असतो तर राजकीय चळवळीचा मुख्य हेतू राजकीय हक्क आणि प्रेरणा यांच्याशी संबंधित असतात .यामध्ये जेव्हा संघटित गटांमध्येही हक्कांबद्दलची जाणीव जागृती होते ,तेव्हा तो समूह कृती प्रयोग बनतो आणि जेव्हा जेव्हा संधी मिळते त्यावेळेस.विरोधात.मतप्रवाह तयार करून व्यवस्थेविरुद्ध संघर्ष करतो तेथे राजकीय चळवळींचा उदय होतो. विशेष बाब म्हणजे जेव्हा समाजातील प्रचलीत मतभेद व प्रश्न सोडवण्यासाठी घटनात्मक चौकट अपूर्ण पडू लागते तेव्हा सामाजिक सौहार्दपणाच्या माध्यमातून सामाजिक प्रश्नांची सोडवणूक होऊ शकते यावर विश्वास निर्माण होऊन या नव्या चळवळींचा.जन्म होत असतो.म्हणून हर्बेल नावाचा विचारवंत चळवळीना सामूहिक भावनांचे प्रकटीकरणाचे माध्यम किंवा साधन मानतो.तो असेही म्हणतो की व्यक्तीच्या इच्छा आकांक्षा एकत्रितपणे व्यक्त कण्याचे माध्यम आणि कोणत्याही क्षेत्रात बदल घडवण्याच्या कार्यालाच .चळवळ असे म्हणता येईल.

भारतात प्रामुख्याने महाराष्ट्रात सामाजिक व राजकीय चळवळी.चालवल्या गेल्या. त्यांचा आढावा घेतला असता.असे दिसून येते की, महाराष्ट्रात ज्या चळवळी परिवर्तनवादी म्हणून ओळखले गेल्या त्या सामाजिक चळवळी होत्या आणि लोक अधिकारासंबंधी ज्या चळवळी झाल्या. त्या राजकीय चळवळी असे म्हटले गेले. जेव्हा लोकशाही व्यवस्थेत लोकशाहीचे विकृतीकरण किंवा विद्रुपीकरण केले जाते. तात्विक भलामण मोठा तुम्हाला केली जाते तेव्हा प्रलंबित असलेले प्रश्न सोडवण्यासाठी

लोक चळवळी किंवा आंदोलनांचा आधार घेतला जातो. महाराष्ट्रात या विधानाची सत्यता पटते. जेव्हा महात्मा फुले यांनी सत्यशोधक समाजाची स्थापना केली आणि आपल्या तेजस्वी विचारांनी महाराष्ट्र, भारत देश ढवळुन काढला तेव्हा भलेही ब्रिटिशांचे राज्य होते परंतु आजच्या लोकशाहीत अस्तित्वात असलेले समाज दोष प्रकटीकरणाचे आयुध त्यांनी वापरले त्याच वैचारिक बैठकीवर आधारित वैचारिक चळवळींचा महाराष्ट्रात उदय झाला. तिला ब्राह्मणेतर चळवळ असे संबोधले गेले. तथाकथित वर्णव्यवस्थेचा व जाती व्यवस्थेच्या जोखडातून समाज मुक्त व्हावा सर्वसामान्य जनतेला गुलामगिरीतून मुक्तता मिळावी. यासाठी महात्मा फुल्यांचा विचारांवर आधारित ब्राह्मणेतर चळवळ उदयास आली. त्यामुळे बहुतांश बहुजन समाजातील लोकांनी एकत्र येऊन स्वतःचा उत्कर्षचा मार्ग शोधला या सर्व चळवळींचा खालील आढावा घेता येईल.

**१ एक ब्राह्मणेतर चळवळ**: महाराष्ट्रातील सामाजिक चळवळीमध्ये महात्मा फुल्यांचा विचारांचा आधार घेतला.विचारांचा घेतला. त्या विचारांना प्रस्थापित झालेल्या शिक्षण व नियोजन या घटकावर ब्राह्मणेतरलोकांमध्ये एकत्व व स्वत्व जपण्याची क्रिया आणि जातिभेदविरहित सत्यशोधक समाजाची निर्मिती,अशी वैचारिक मांडणी होती .याच तत्त्वाचा पुरस्कार पुढे डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर, छत्रपती शाहू महाराज, कर्मवीर भाऊराव पाटील आदी प्रभूतींनी केला होता.

**२.दलित चळवळ:** महात्मा फुले यांचा सत्यशोधक विचाराने समाजाला जे आत्मभान प्राप्त झाले. त्याचाच परिणाम म्हणून प्रचलित ब्राह्मणी वर्चस्वाला म्हणजे आव्हान निर्माण झाले. त्यावेळेस ब्रिटिशांची शैक्षणिक निती.याकारणास्तव नवा सुशिक्षित वर्ग.भारतात जन्मास आला आल्यावर त्यातील एक होते. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांनी वर्षानुवर्ष दडपलेल्या वर्गाला पर्यायी सांस्कृतिक व सामाजिक व्यक्तित्व मिळवून देण्यासाठी जो वैचारिक व सक्रिय लढा दिला. त्यास भारतीय इतिहासामध्ये तोड नाही. त्यांच्या विचारांची प्रेरणा घेऊन महाराष्ट्रात दलित चळवळी.उभ्या राहिल्या. प्रत्येकाला मानव म्हणून जीवन जगता यावे मानवासारखी वागणूक प्रत्येकाला प्राप्त व्हावी. याकरिता गुलामगिरीच्या बेड्या तोडून शिक्षण, संघटन व संघर्ष ही या आंदोलनाची त्रिसूत्री होती. नंतरच्या काळात ही चळवळ राजकीय पक्षांच्या रूपात संघटित झाली असली तरी त्यामध्ये पुरेशी क्षमता व सक्षमता येऊ शकली नाही परंतु डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर याच्या वैचारिक योगदानामुळे दलित चळवळीला आत्मभान मिळवून दिले .

**३.शेतकरी व कामगार चळवळ:** १९ व्या शतकात जगभरात मार्क्सवादाचा उदय झाला आणि शोषण विरुध्दचा मार्क्सवादी सिद्धांत नवा क्रांतिकारक विचार मांडता झाला त्याचा परिणाम भारतातील कामगार चळवळीवर देखील झाला , भारतातील कामगार वर्ग जागरूक होऊन अन्यायविरुध्द संघर्ष करू लागला त्यास यश प्राप्त होऊन भारतात मोठ्या प्रमाणात कामगार संघटना प्रबळ बनल्या कामगारांसाठी वेतन पेन्शन कामाचे तास आरोग्यदायी सुविधा मिळायला लागल्या परंतु काही बाबतीत वैचारिक प्रश्नांचा गुंता सोडवणूक कामगार चळवळ सोडवू शकली नाही त्यामुळेच मुंबई गिरणी कामगार संप चिघळला योग्य मार्ग न शोधल्यामुळे कामगार चळवळीचे खूप मोठे नुकसान झाले थोडक्यात कामगार चळवळीला वैचारिक बैठक मार्क्सवादी तत्त्वज्ञान होते परंतु कालपरत्वे येणारा लवचिक पणा ,प्रगल्भता या चळवळीस लाभला नाही .

शेतकरी चळवळ ह्या भारतातील अनोख्या सामाजिक चळवळी आहेत तसे पाहता भारतात वेगवेगळ्या प्रकारचे शेतकरी आहेत , स्वातंत्र्य पुर्व काळात शेतकरी चळवळीस आर्थिक संघर्षाची धार होती कारण उत्पादनाच साधन म्हणजे शेती ही ज्यांच्या कडे होती ते मोठे शेतकरी ,जमीनदार होते आणि ज्यांच्या कडे शेती नव्हती असे शेत मजूर किंवा शेत कामगार होते. जमीनदार हे शेतमजुरांची आर्थिक पिळवणूक करत असत या संदभात शेतमजूर व छोटे शेतकरी यांनी एकत्र येऊन जमीनदारी विरोधात चळवळी चालविल्या व त्यात यशही आले उदा. रायगड जिल्ह्यातील चरी येथील शेतकरी संप कै.नारायण नागू पाटील यांच्या नेतृत्वाखाली चालविण्यात आलेला प्रदीर्घ लढा होता त्यामध्ये आर्थिक पिळवणूक हे प्रमुख कारण होते थोडक्यात आर्थिक भेदातून पिळवणूक , पिळवणूकीतून संघटीत संघर्ष आणि संघर्षातून अन्यायनिवारण अशी मार्क्सवादी वैचारिक बांधणी स्वातंत्र्यपूर्व काळात शतकरी चळवळीची होती परंतु स्वातंत्र्योत्तर काळात शेतकरी चळवळी या व्यवस्थेविरुध्दच्या चळवळी बनल्यात त्यांना राजकीय व्यवस्थेकडून काही सवलती ,सुविधा ,कर्जमाफी ,शेतमालास भाव यासाठी शासनाचे लक्ष वेधून घेणाऱ्या केवळ लक्ष वेधी चळवळी होत्या परतू अलीकडील काळात अन्यायकारक कायद्या विरोधात शेतकरी चळवळ प्रदीर्घ काळ आदोलन करु शकते हे भारतातील किसान आंदोलनाने दाखवून दिले आहे. म्हणजे योग्य वैचारिक बैठक असल्यास शेतकी चळवळ यशस्वी होऊ शकते.

**४. महिला चळवळ :** भारतीय समाज व्यवस्थेने प्राचीन काळापासून " न स्त्री स्वातंत्र्य मर्हती " असा न्याय समाजातील महिलांबाबत वापरलेला आहे म्हणजे प्राचीन काळापासूनच स्त्रियांचा दुय्यमपणा माननारे घटक महिलांनी केलेले उत्पादक कार्य कुचकामी मानून महिलाना ज्ञान संपत्ती ,कला कौशल्ये साधनसामुग्री या बाबतीत कोणताही हक्क सांगू नये अशी व्यवस्था उभी करण्यात आली होती त्यास धार्मिक व सामाजिक मुलामा चढवून महिला कायम बंदिस्त कशा राहतील याची पध्दतशीर व्यवस्था भारतीय समाज रचना

केलेली होती त्यातून बाहेर पडता येऊ नये यासाठी वविध व्रत वैकल्यांमध्ये महिलांना अडकवून ठेवण्यात आले होते परंतु महात्मा फुले यांनी आपल्या विचारांव्दा रे स्त्रियांना शिक्षण हाच जीवन मुक्तीचा मार्ग असल्याचे प्रतिपादन करीत भारतीय महिलाचळवळीस उत्तेजन दिले परिणामी महिलाविषयक सामाजिक चळवळी सुरु झाल्या महिलांना समाजात मानसन्मान प्राप्त व्हावा यासाठी स्वातंत्र्य पूर्व काळात राजा राममोहन रॉय, आगरकर ,महात्मा गांधी यांनी योगदान दिले परंतु स्वातंत्र्यानंतरच्या काळात महिला चळवळींना राजकीय स्वरूप प्राप्त झाले ते केवळ डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांनी केलेल्या असामान्य कामगिरीमुळे त्यांनी राज्य घटने मध्ये स्त्री पुरुष समानतेची नोंद करून जीवनमान शिक्षण ,मालकी हक्क या बाबतीत सर्वांना समान अधिकार असल्याचे स्पष्ट केले तेव्हापासून भारतातील महिला केवळ सामाजिक नव्हे तर राजकीय अधिकाराची चळवळ करू लागल्या. थोडक्यात भारतातील व महाराष्ट्रातील महिला चळवळीला महात्मा फुले, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यासारख्या विचारवंतांचे वैचारिक पाठबळ लाभल्यामुळेच हि चळवळ यशस्वी झालेली आहे

**५.लोकाधिकार चळवळी** : आज सर्वत्र लोकशाहीचा स्वीकार करण्यात आलेला असला तरी लोकशाहीचा अर्थ लोकांना समजला आहेच अस नाही दुर्दैवाने लोकशाही लोकांना काहींसाठी काहींनी चालवलेली शासन पद्धत वाटू लागते अशा परिस्थितीत काही उपेक्षित गट व्यवस्थेकडे नव्या मागण्या करून राजकीय प्रश्नांची मांडणी करून व्यवस्थेकडून उत्तरे मागतात तेव्हा हि उत्तरे शोधण्यासाठी लोकांकडून परिवर्तन वादी उपाय योजना शोधली जाते ती म्हणजे परिवर्तनवादी लोकाधिकार चळवळ अशा चळवळी विशेषता विकास प्रकल्पांमुळे बाधित ,विस्थापितांच्या हक्कांसाठी ,पर्यावरणीय प्रश्नांसाठी ,आदिवासींच्या न्याय्य मागण्यांसाठी ,राहणीमान उंचावण्याकरिता रचनात्मक बदलांसाठी आणि नव्या व्यवस्था मागण्यासाठी या चाल्व्लिया केल्या जातात अर्थात या लोकाधिकार चळवळी या राजकीय स्वरूपाच्या असतात सत्तेत जाणार नाही पण सत्तेला वरचढ होऊ देणार नाही अशी वैचारिक भूमिका या चळवळ ची असते या संदर्भात देशातील व महाराष्ट्रातील लोकपाल चळवळ नर्मदा बचाव आंदोलन या आंदोलनांची भूमिका अशींच आहे

**आजची स्थिती** : सध्याच्या भारतातील व विशेषत:महाराष्ट्रातील सामजिक व राजकीय चळवळींचा परामर्श घेतला तर असे दिसून येते कि सध्या काही अपवाद वगळता जवळपास सर्वच राजकीय सामाजिक चळवळी किंवा आंदोलने आपली विचारधारा विसरले आहेत किंवा किंवा त्यात सोयीप्रमाणे बदल झालेला आहे काहींची वेगळी "स्टाईल " आणि मतलबीपणा ही वैचारिक विचारधोरेला मारक ठरत आहे. त्यातून तत्वशुन्यता वाढत आहे म्हणून चळवळींची विचारधारा कायम राहणे गरजेचे बनले आहे.

**संदर्भ ग्रंथ सूची**

१.भारतातील सामाजिक चळवळी :घनश्याम शहा
२.भारतातील महिला विकासाची वाटचाल: ज.श.आपटे पुष्पा रोडे
३.राजकीय सिद्धांत: दि,ए.जोशी
४.भारताचे शासन व राजकारण :भा.ल .भोळे
५.राजकीय विचार प्रणाली :श .ना . नवलगुंदकर

□ □ □

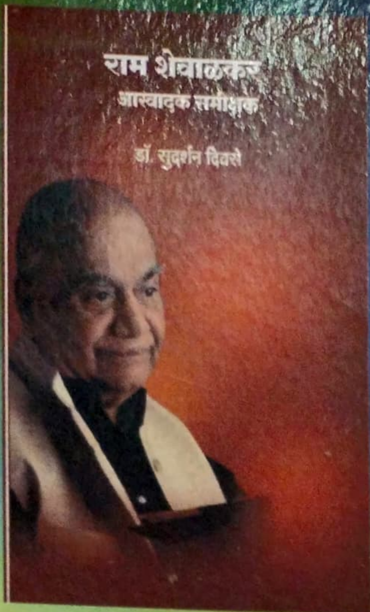


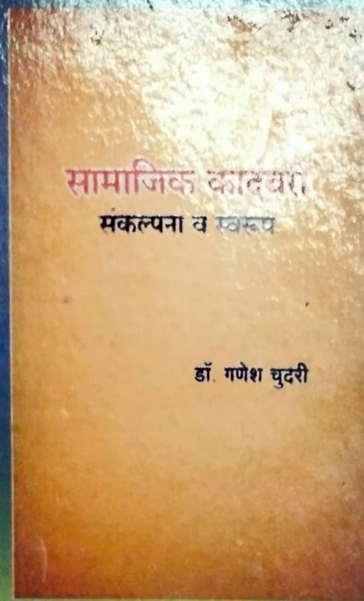


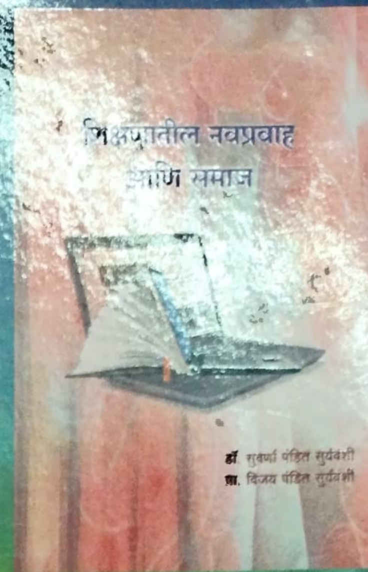

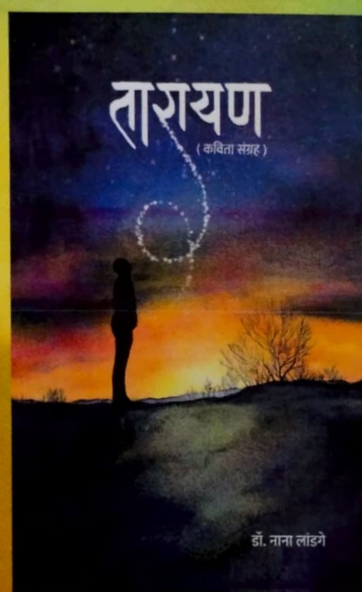


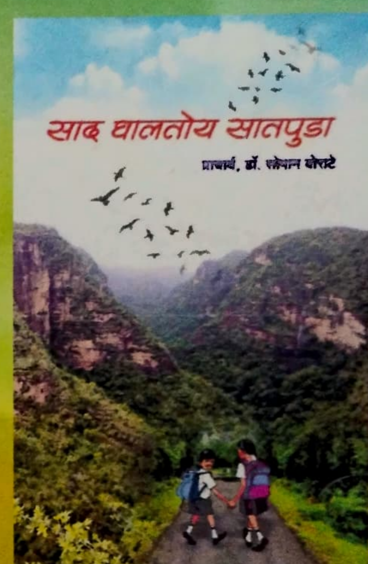


**For All Types of Books Publication with ISBN Number Please Contact**

AMRJ

# AKSHARA PUBLICATION

**Plot No.143, Professors Colony, Near Biyani School, Jamner Road,
Bhusawal Dist. Jalgaon. Maharashtra 425 201. Mob. 09421682612**

ISSN 2582-5429
9 772582 542001